http://krishipravahika.vitalbiotech.org/

कृषि प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका

e-ISSN: 2583 – 0430

कृषि-प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका, (2023) वर्ष 3, अंक 5, 11-13

Article ID: 276

कपास की उन्नत सस्य क्रियाएं

योगिता बाली[1] और रेणु देवी[2]

[1]कृषि विज्ञान केंद्र, भिवानी
[2]कृषि विज्ञान केंद्र, सिरसा
चौ. चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

कपास खरीफ में बोई जाने वाली एक महत्वपूर्ण नकदी फसल हैं। हरियाणा में लगभग 6 लाख हेक्टेयर में इस फसल को बोया जाता है। हरियाणा क्षेत्र में लगभग 4-5 क्विंटल प्रति एकड़ औसतन पैदावार आकी गई है। पर किसान उन्नत सस्य क्रियाएं अपनाकर अपनी पैदावार में इजाफ़ा ला सकता हैं। कपास की अधिक से अधिक पैदावार लेने क लिए कुछ बातोँ का विशेष ध्यान रखना अति अवश्यक है जैसे की प्रमाणित बीजो का चयन, बोने का समय, मिट्टी के प्रकार की जानकारी, खाद एवं पानी का उपयुक्त एवं संतुलित प्रयोग आदि बातों को ध्यान में रख कर अच्छी पैदावार ली जा सकती हैं। चना, सरसों, गेहूं के बाद कपास की फसल ली जा सकती हैं।

बिजाई का समय :

रबी फसलों की कटाई के बाद कपास की बिजाई के लिए खेत को अच्छी तरह से तैयार कर ले, 3-4 गहरी जुताई कर ले फिर सुहागा लगाये। कपास की बिजाई 15 अप्रैल से मई के अंत तक की जा सकती हैं। परन्तु विशेष रूप से ध्यान रखे जहाँ मिट्टी रेतीली हो वहां कपास की बिजाई अप्रैल माह पहले पखवाड़े तक पूरी कर ले ताकि लू चलने से रेत के कारण पौधें जलने की समस्या से बचा जा सकता हैं,। अन्यथा बी. टी. कपास

की बिजाई मई माह के अंत तक की जा सकती हैं।

बीज की मात्रा :

बी. टी. संकर – 0.850 किलो ग्राम प्रति एकड़ (रोये उतारे बीज) संकर : 1.2 -1.5 किलो ग्राम प्रति एकड़ (रोये उतारे बीज)
देसी : 5.00 किलो ग्राम प्रति एकड़ (रोये उतारे बीज)

बीज उपचार :

किसी भी फसल की गुणवता एवं पैदावार बढ़ाने के लिए बीज उपचार करना अति आवश्यक हैं। देसी कपास में बीज उपचारित करने के लिए एमिसन 5 ग्राम, स्ट्रेप्टोसैक्लिन1 ग्राम, सक्सीनिक 1 ग्राम को 10 लीटर पानी में मिला कर उपचारित करे, इससे फसल को 45 -50 दिन तक बचाया जा सकता हैं। यदि दीमक की समस्या हो तो 10 मिली लीटर क्लोर्पैरिफोस 20 ई सी को बीज में मिलाये । और सुत्रकर्मी से बचाव के लिए जी डी. 35 -47 टीके से उपचारित करे । जड़ गलन की समस्या के लिए 2 ग्राम बाविस्टिन प्रति किलो ग्राम बीजो का सुखा उपचार करे।

बिजाई का तरीका :

बीज को 4 -5 सेंटीमीटर गहरा बोये, क़तर से क़तर की दूरी 67.5 सेंटीमीटर रखे, पौधें से पौधें की दूरी 60 सेंटीमीटर । यदि पछेती बिजाई करनी हो तो पौधें से पौधें का फासला कम रखे साथ ही 25 प्रतिशत बीज की मात्रा बढ़ा ले । बिजाई के 2 -3 सप्ताह के बाद बिरला कर लेना चाहिए।

खाद व उर्वरक :

खादों व उर्वरक का प्रयोग मिट्टी की जाँच के आधार पर संतुलित मात्रा में करना अति उत्तम हैं। नाइट्रोजन वाली खादों का कपास की फसल पर अच्छा प्रभाव पड़ता हैं । संकर व बी.टी. के लिए यूरिया 150 किलोग्राम, सिंगल सुपर फॉस्फोरस 150 किलोग्राम , MOP 40 किलोग्राम, जिंक सलफेट 10 किलोग्राम प्रति एकड़ दर से डाले । फॉस्फोरस व जिंक सलफेट की पूरी मात्रा बिजाई के समय अवश्य डाले। बी. टी. में नाइट्रोजन की खाद का स्प्लिट एप्लीकेशन करे – **बिजाई के समय, बोकी आने पर तथा फूल आने पर । फूल और टिंडा बनने पर यदि पोटैशियम नाइट्रेट का छिड्काव किया जाये तो कपास की उत्पादकता तथा गुणवता में वृद्धि होती हैं।**

सिंचाई :

कपास की फसल को 3-4 बार सिंचाई की अवश्यकता होती हैं । फल और फूल के समय सिंचाई का विशेष ध्यान रखे अन्यथा आभाव के कारण फसल की पैदावार पर बुरा प्रभाव देखा जा सकता हैं। जहाँ रेतीली जमीन हो वहां 4-5 दिन बाद फव्वारा विधि से पानी लगाये और जहाँ खुला पानी लगता है वहा पहला पानी 45-50 दिन या बाद में लगायें इससे जड़ो के विकास में मदद मिलती है। जब वर्षा न होने के कारण लम्बा सुखा रहता है तब इन विकसित जड़ो द्वारा पौधा पानी की कमी को पूरा कर लेता हैं । कपास में आखिरी सिंचाई 1/3 टिंडे के खुलते ही कर दे । इसके बाद पानी न लगाए । वैसे तो कपास में टपका विधि से सिंचाई कर पानी की बचत की जा सकती है। और साथ ही जमीन में नमी भी बनी रहती हैं।

खरपतवार नियंत्रण :

कपास में खरपतवार नियंत्रण के लिए 2-3 बार निराई गुड़ाई सबसे अच्छी हैं । पर खरपतवारनाशी का भी प्रयोग किया जा सकता है । सांठी व सावंक के लिए बिजाई के तुरंत बाद व फसल उगने से पहले स्टोम्प 30 का प्रयोग 2.0 लीटर प्रति एकड़ के हिसाब से करे । वार्षिक खरपतवारो के लिए बिजाई के 40-50 दिनों के बाद टेफ़लान 0. 8 लीटर प्रति एकड़, 200 -250 लीटर पानी में प्रयोग करे।

मुख्य बातें :

1. बी. टी. कपास में खेत के चारों ओर रिफूजिया अवश्य बोये। इससे कीटो की प्रतिरोधकता की जा सकती हैं।
2. बीज उपचार अवश्य करे ताकि पौधें को 45 -50 दिनों तक बीमारियो से बचाया जा सकता हैं।
3. सक्सीनिक तेजाब से उपचार करने से जड़े तेज़ी से फैलती हैं और सुखा होने पर निचले स्तर से नमी खीचने में मदद करती हैं।
4. पौधों की संख्या लगभग 27000 से 30000 के बीच रखे।

5. बिरला अवश्य करे, कमज़ोर व रोगग्रस्त पौधों को निकल दे ।
6. खादों का संतुलित मात्रा में प्रयोग करे ।
7. एक कीटनाशक का प्रोयोग बार –बार ना करे, अन्यथा प्रतिरोधकता क्षमता आ जायेगी ।
8. मैल्फर्माशन (बंदर पंजा) से प्रभावित पौधें को ऊपर 15 सेंटीमीटर से तोड़ दे फिर 2.5 प्रतिशत यूरिया साथ ही 0.5 प्रतिशत जिंक सल्फेट के घोल का छिड्काव करे ।
9. कपास के खेत के आसपास कंगी बूटी ,पीली बूटी, कांग्रेस घास को नष्ट कर दे । ताकि ये कीड़ो को बढ़ावा न दे ।
10. कपास के खेत के आसपास भिन्डी की फसलों पर निगरानी रखे व रोकथाम करे ।
11. कपास की शुरूआती अवस्था में जहेरीले कीटनाशको का प्रयोग न करे, इसका बुरा प्रभाव मित्र कीटों की संख्या पर भी होता हैं ।